हि०
74

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gra

तमिऴ शिक्षण पत्रिका नागरी

★

("तमिऴ प्रवेश नागरी लिपि" पुस्तक के अध्ययन के बाद, इस पत्रिका के द्वारा तमिल भाषा का और परिचय मिल सकेगा।)

नई तालीम विद्यापीठ
पोस्ट; सेवाग्राम
जिल्हा, वर्धा

रा० शंकरन्
संपादक

तमिळ शिक्षण पत्रिका नागरी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

★

("तमिळ प्रवेश नागरी लिपि" पुस्तक के अध्ययन के बाद, इस पत्रिका के द्वारा तमिल भाषा का और परिचय मिल सकेगा।)

अहर मुदल अॆळुत्तॆल्लाम् आदि
भगवन् मुदट्रे उलहु

नई तालीम विद्यापीठ
पोस्ट; सेवाग्राम
जिल्हा, वर्धा

रा० शंकरन्
संपादक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

पाठकों से

अेनदु ताय् भाषै तमिऴ् नींगळ् ओरळवु पडित्तीर्हळ्। मेलुम् कऱ्क विरुम्बुवीर्हळ्। अदर्क्काह अेनदु इन्द मुयऱ्चि। उंगळ् उदवि किडैक्कुम् अेन नम्बुहिऱेन्। कडवुळुम् अरुळ् पुरिवार्।

रा. शंकरन्

महीने में एक बार २४ से ३२ पेज तक पढने की वाचन सामग्री देनेका संकल्प है। पाठकों से एक साल के लिये ६) रु. मदद की अपेक्षा है। आरम्भ में ग्राहक संख्या कम रहेगी, इस वास्ते स्वेच्छा से विशेष मदद देने की इच्छा रखनेवालों से १०) तक आशा रखते हैं।

रकम मनीआर्डर द्वारा भेजनेका पता :

संचालक
तमिऴ् विभाग
नई तालीम विद्यापीठ
पो० सेवाग्राम
जि० वर्धा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शिक्षण और भाषा–शिक्षण; यह पत्रिका क्यों ?

दक्षिण अफ्रीका में ही गान्धीजीने तमिल सीखी (अंग्रेजी माध्यम से)। क्यों ? उनके साथी तमिल भाई बहनों के साथ **एक–रूपता** को तथा अपनी सेवाशक्ति बढाने। उसी कारण से नौआखली–यात्रा के दरम्यान बंगला का अभ्यास शुरू किया जो ३० जनवरी १९४८ तक जारी रहा। बीच में अक्टोबर १९४४ में सेवाग्राम आश्रम में मेरे सामने तमिल लिखने का अभ्यास करते थे। प्रान्तीय भाषाओं में पत्र लिखाना भी शुरू किया था।

विनोबाजीने तो भारत की सभी मुख्य भाषायें सीख लीं और उन भाषाओं के प्रसिद्ध धर्म–ग्रन्थोंका भी अच्छा अध्ययन किया है। दूसरी कमालकी बात उन्होंने यह की कि अपनी भारत–भरकी चौदह साल की लम्बी यात्रा में सब जगह हिन्दी में ही बोले ! प्रान्त विशेष का हिन्दी प्रचारक, अनुवादक के रूप में साथ रहता था। जो विदेशी जिज्ञासु आये उनके साथ अंग्रेजी में भी चर्चा की। इस तरह 'तीन भाषा सूत्र' का उन्होंने एक प्रत्यक्ष व अनुकरणीय मानदन्ड हमें दिया। और एक महत्व की बात उन्होंने की जो अब गुप्त है। अपने गीता–प्रवचन के प्रान्तीय भाषाओं के संस्करणों को **नागरी लिपिमें भी प्रकाशित कराया।** केवल तमिल और मलयालम के संस्करण बाकी रहे। इन्हें भी पूरा करने की उनकी इच्छा है। इस बारें में उनका मेरे नाम पर आया पत्र इस प्रकार है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

कदमकुआँ, पटना–३
२२–६–६४

श्री० शंकरन्,

हमको कोअी बडे पैमाने पर प्रयत्न नहीं करना है। तमिऴ भाषा सीखने के लिये अनुकूलता पैदा करना; अितना ही हमारा कार्य।

आपने नागरी लिपि में तमिऴ पत्र मुझे लिखा है। वह मुझे बहुत अच्छा लगा। उस पद्धति से अगर तमिऴ गीता–प्रवचन नागरी में छप जाय तो प्रचार का अेक बहुत बडा साधन बनेगा। अनेक भाषाओं के गीता–प्रवचन उन–उन लिपियों के अलावा नागरी में भी छपे हैं। तमिऴ और मलयालम रह गये हैं। क्योंकि पद्धति निश्चित नही होती थी। लेकिन् अब पद्धति बन गयी अिसलिये मार्ग खुल गया है।

हमारी यात्रा बहुत अच्छी तरह चल रही है।

विनोबा का जय जगत।

इतना पूर्व वृत्तान्त देनेंके बाद, समस्या पर आता हूं। हिन्दी के तीव्र विरोध के कारण जो तीन भाषा सूत्र अल्प अवधि के लिये मान्य रहा, उससे ये दोनों राष्ट्र व काल–पुरूष संतोष नही मानते रहे। पाठ्यक्रम द्वारा बच्चोंपर लादने के पहले, खुदके उदाहरण से शिक्षक, नेता, और माता–पिता करके दिखावें ऐसा वे चाहते रहे। इन दोनों महापुरूषो की शिक्षा की अवहेलना से आज सारे राष्ट्र में शोचनीय हालत उत्पन्न हुअी है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

१९४२ में जिनकी उमर ३० साल के अन्दर रही और जो लोग अखिल भारतीय राजनीति में कूद पडे, क्या उनका कम–से–कम हिन्दी को अच्छी तरह सीखने का फर्ज नहीं था ? क्या काँग्रेसी–जन इस मामले में ज्यादा दोषी नहीं हैं, जिन्होंने हिन्दी को १५ साल में राज–भाषा बनाने का **कानून बनाया ?** जो भी हो, अब मामला ज्यादा नहीं बिगडे तो कम से–कम नीचे लिखी बातों पर राष्ट्रहितैषियों को विचार करना जरूरी है।

(१) शिक्षा प्रादेशिक भाषा में (बच्चों की ७ से १४ या १५ साल की उमर तक)

(२) हिन्दी की शिक्षा तीन साल (१० से १२ साल तक की ऊमर में) और उसके बाद **भारतीय इतिहास हिन्दी में।** यह सब अ हिन्दी–प्रान्तों में हो सकता है। हिन्दी प्रान्तों में तीन साल कोई दक्षिणी भाषा सिखायी जाय और आगे दो साल दक्षिण भारत का इतिहास उस भाषा में पढें; ताकि सीखी भाषा को न भूलें।

(३) तेरह साल की उमर के बाद दो साल अंग्रेजी भाषा की शिक्षा।

(४) १५ या १६ साल बाद शिक्षा में मातृ–भाषा, हिन्दी और अंग्रेजी तीनों, विषयों के मुताबिक सीखने का माध्यम रहे।

(५) पाठ्य–पुस्तकें बनाने की चिन्ता छोडकर सारा जोर **शिक्षकों को कई भाषाएं सिखाने पर** दिया जाय तो भाषाएं सीखे हुए लोग जब पढाने लगेंगे तब पुस्तकें ढेर की ढेर तैयार हो जायेंगी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

(६) आजका दुर्भाग्य यह है कि शिक्षक एक ही विषय पढा सकता है। और वह भी एक भाषा द्वारा, वह भी विदेशी भाषा।

अंत में एक बात :

२२-७-६७ बाबा (विनोबा) ने नागरी लिपि में कन्नड गीता-प्रवचन पढना शुरू किया। पंद्रह दिन में पूरा कर दिया। कह रहे थे कि एक-एक पन्ना मैं चार-चार दफे पढता हूँ। क्यों पढता हूं ? मनोरंजन के लिये ? जो भी पढता हूं कर्तव्य भावना से पढता हूं। कर्नाटक के साथ एकरूपता महसूस करने के लिये पढता हूं।

शिक्षा और भाषाओं के विषय में उनका यह कथन मार्मिक है, "मातृभाषा और हिन्दी ये दोनों दो आंखें हैं। संस्कृत तीसरी आंख है जो सब पर प्रकाश डालती है। अंग्रेजी तो चश्मा है जो तेजहीन आखों के लिये है।"

हिन्दी और नागरी द्वारा देश की भाषाओं को सीखने और सिखाने के लिये, एक नहीं, दो तीन पुस्तकें उपलब्ध कराने का बडा रचना-कार्य अब तक बाकी है। उसी दिशा में यह पत्रिका एक कदम है। महानों का कथन प्रसिद्ध है- "एक कदम मेरे लिये काफी है।"

-संपादक

The medium of instruction should be altered at once and at any cost; the provincial languages being given their rightful place. I would prefer temporary chaos in higher education to the crimnal waste that is daily accumulating.

'Mind of Mahatma' Page 382

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अहर मुदल ॲेळुत्तेल्लाम् आदि
भगवन् मुदट्ऱे उलहु ।।

ॲेळुत्तुहळ् ॲेल्लाम् अहरमाहिय मुदलै उडैयन। अदु पोल उलहम् आदि भगवानाहिय मुदलै उडैयदु ।

अक्षरों का मूल अकार है । न केवल तमिळ के बल्कि संस्कृत के भी ।

अहर = अकार । महर = मकार इसी तरह बाकी के भी

भगवन् = भगवान । संस्कृत शब्दों का फ़रहेज़ उस जमाने में नही था । वह आधुनिक उपज है ।

तिरुकुऱळ् तमिळिल् अऱ नूल् (धर्म–ग्रन्थ) अदु मिह पळय नूल् । अदै "तमिल वेद" ॲेन हिन्दियिल् मोळि पेयर्त्तु इरुक्किऱार्हळ् । उलहत्तिन् पल्वेऱु भाषैहळिलुम् मोळि पेयर्क्कप्पट्टु इरुक्किऱदु ।

इन्नूलै इयट्ऱियवळ् (रचयिता) तिरूवळ्ळुवर् । इरण्डु आयिरम् वरूडंगळुक्कु मुन् इवर् तमिळ् नाट्टिल् पिऱन्दार् । कबीरदास पोल इवरुम् ओरु शेणियर् ॲेन कूरुहिऱार्हळ् ।

तिरु कुरळिल् मूनऱु भाहँगळ् उळ्ळन । अऱत्तु पाल्, पोरुळ पाल, कामत्तु पाल् (धर्म अर्थ, काम)। तमिळ करप-वर्हळुक्कु वळ्ळुवरै पट्रियुम् अवर् इयट्ऱिय नूल् कुरळ पटऱियुम् शिरिदावदु तेरिय वेण्डुम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

वाऴ्ह नी अेम्मान् इन्द वैयत्तु नाट्टिलेल्लाम् ।
ताऴ्वुट्रु वरुमै मिंजि विडुदलै तवरिक् केट्टु ।
पाऴ्पट्टु निन्ऱदाम् ओर् भारत देशम् तन्नै ।
वाऴ्विक्क वन्द गान्धी महात्मा नी वाऴ्ह; वाऴ्ह ॥

भावार्थ :–

हे हमारे महत्मा गांधी, तेरी जय हो । इस दुनिया के सब देशों में निचले पद को प्राप्त; अति दरिद्र हुए, स्वतंत्रता को भूल से खोये हुए; सब तरह से नष्ट–भ्रष्ट भारत देश को जिलाने के लिये आये हो तेरी जय हो, तेरी जय हो,

तमिल प्रान्त के क्रान्तिकारी राष्ट्रीय कवि स्व. **सुब्रह्मण्य** भारतिने करीब १९१९ में महात्मा गांधी के नये आंदोलन के महत्व को भली भांती समझ कर गांधी की स्तुति में पांच पद बनाये। उनका नाम है "गान्धी पंचकम–"। उसका यह पहला पद है ।

वाऴ्ह = जियो; लक्षणा से जय हो ।
वैयहम् = दुनिया । कविता में वैयम् ।
वरुमै = गरीबी ।
मिंजि = बढ कर ।
विडुदलै = स्वतंत्रता ।
पाऴ् = खण्डहर ।

गीतैप् पेरुरैहळ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(तमिल नागरी)

आचार्य विनोबा भावे

मूल तमिल में प्रकाशक
सर्वोदय पिरचुरालयम्
तंजाऊर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

पाठकों से

गीताप्रवचन के कुछ अंश पत्रिका के हर अंक में देने का विचार है। इसके द्वारा तमिल सीखनेवालों को एक सरल सहज साधन मिलेगा। लिपि परिचय के लिये तमिल में और शब्दों के अर्थ लिये हिन्दी में पुस्तकें उपलब्ध हैं। "तमिल प्रवेश" के पाठक-संख्य थोडा बढने पर यह क्रम रखने को मैंने पू. विनोबाजी से कहा था। वह इस पत्रिका द्वारा शुरू होता है।

मूल तामिल में संधि किये शब्दों को नागरी में संधि-रहित अलग-अलग रखा है। इससे पाठक आसानी से अर्थ समज सकेंगे और संधि के नियम भी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गीतैप् पेरुरैहळ्

मुदल् अत्तियायम्

तोट्ऱुवाय्–विषाद योगम्

(१) महाभारत मत्तियिल्

अन्बार्न्द सहोदरर्हळे,

इन्ऱु मुदल् नान् श्रीमद् भगवत् गीतैयैप् पट्ऱि शोल्लप् पोहिऱेन्। गीतैक्कुम् अेनक्कुम् उळ्ळ तोडर्बु पहुत्तऱिवै मीऱिय ओन्ऱु। अेन् उडल् तायिन् पालिनाल् (पालाल्) वळर्न्दिरुप्पिनुम्, अदिहमाय् अेन् उळ्ळमुम् अऱिवुम् गीतैयाम् पालिनाल् वळम् पेट्ऱु इरुक्किन्ऱन। उळ्ळत् तोडर्बु उळ्ळ इडत्तिल् तर्कत्तुक्कुम् इडम् इरुप्पदिल्लै। तर्कत्तै नीक्कि, शिरत्तै अनुष्टानम् अेन्नुम् इरु शिऱहुहळिन् तुणै कोण्डु नान् गीतै अेन्नुम् वानिल् अेन् शक्तिक्कु उहन्द वहैयिल् अेळुम्बि वट्टमिट्ट वण्णम् इरुक्किऱेन्। नान् पेरुम्बालुम् इरुप्पदु गीतै शूळ्निलैयिल् तान्। गीतैयै अेन् उयिर् तत्तुवम् अेन्ऱु (इति) कूऱलाम्। नान् पिऱरुडन् गीतैयैक् कुऱित्तु उरैयाडुहैयिल् गीतैक् कडलिल् नीन्दुहिऱेन्। तनित्तु इरुक्कैयिलो अव्वमुद वारिदियिन् अडियिल् आऴ्न्दु अमर्न्दुविडुहिऱेन्। इन्द गीतैत् तायिन् वरलाट्ऱै नान् ञायिऱु तोऱुम् कूऱुवदु अेन (इति) मुडिवाहि इरुक्किऱदु।

गीतै उरुवाक्कप् पट्टिरुप्पदु महाभारत्तत्तिल् आहुम् । गीतै
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
महाभारतत्तिन् नडुविल् महाभारतम् मुळ्ळुवदिलुम् ओळि वीशिक्कोण्डु इरुक्कुम् ओरु नन्दाविळक्कु अन अमैन्दु इरुक्किऱदु । ओरु पक्कम् आरु पर्वंगळुम् मरु पक्कम् पन्निरण्डु पर्वंगळुम् इरुक्क अवट्ऱिन् इडैयिल् इदु अमैन्दु इरुप्पदु पोलवे, ओरु पुऱम् एळु अक्षौहणियुम् मऱुपुऱम् पदिनोरु अक्षौहणियुमाय् शेनै अणिवहुत्तु निऱ्क अवैहळिन् इडैये गीतै पोदिक्कप्पडुहिऱदु ।

महाभारतमुम् रामायणमुम् नम् नाट्टुप् पोदु नूल्हळ् । अवट्ऱिल् वर्णिक्कप्पेरुम् पात्तिरंगळ् नम् वाळ्क्कैयिल् ओन्ऱि कलन्दुपोय् विट्टवर्हळ् । इरामन्, सीतै, दरुमन् दिरौपति, भीष्मन्, हनुमान् मुदलिय रामायण महाभारत पात्तिरंगळिनाल् पल्लायिरम् आण्डुहळाह इंदिय वाळ्क्कै पुनितमडैन्दु वन्दु इरुक्किऱदु । उलहिन् पिऱ महाकाव्यंगळिन् पात्तिरंगळ् मक्कळ् वाळ्क्कैयिल् इव्वारु कलन्दिरुक्कक् काणोम् । इव्वहैयिल् महाभारतमुम् रामायणमुम् अऱ्पुतमान नूल्हळ् अन्बदिल् ऐयम् इल्लै । इरामायणम् ओर् इनिय नीति नूल् आयिन् महाभारतमो परन्द समूह शात्तिरम् आहुम् । वियास मुनिवर् इलक्षम् शुलोकंगळ् अळुदि अण्णिला शित्तिरंगळैयुम् वरलारुहळैयुम् नडप्पुहळैयुम् उळ्ळदु उळ्ळवाऱे पेरु आट्ऱलुडन् वरुणित्तु इरुक्किऱार् । आण्डवन् ओरुवनैत्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तविर कुट्ऱम् कुऱैहळै अवरवर् ऎन्ऱु नेर् माऱियुम् शोल्लुवदऱ्किल्लै; अदे वहैयिल् इव्वुलहिल् कुट्ऱमे उरुवानवन् ऎनत् तक्कवनुम् इल्लै ऎन्बदै महाभारतम् वेहु तॆळिवाय्क् कूऱुहिऱदु । इदिल् भीष्मन् दरुमन् आहियोरिन् कुऱैहळैक् काट्टि इरुप्पदु पोन्ऱे, कर्णन् दुरियोदनन् आहियोरदु नऱ्कुणंगळुम् विळक्क पेट्ऱिरुक्-किन्ऱन । मानिड वाऴ्क्कैयै वॆळ्ळै करुप्पु आहिय इरु वहै नूल्कोण्डु नॆय्द आडै ऎन्ऱु महाभारतम् कूऱुहिऱदु । वियास भगवान् ताम् शार्बट्ऱु तनित्तु निन्ऱु कोण्डु उलहिन्—परन्द संसारत्तिन्—इरुळुम् ऒळियुम् कलन्दु अमैन्द शित्तिरत्तै तिरैयिलिट्टुक् काट्टुहिऱार् । वियस-देवरिन् शिऱ्ऱिदुम शार्बु अट्ऱदुम् मिहच् चीरियदुमान इप्पडैप्पु तिऱनाल् महाभारतम् ऒरु मापॆरुम् तंगच् चुरंगमाहवे अमैन्दुळ्ळदु । अदैत् तोण्डि तेवैयान तंगत्तै पॆऱुवोमाह ।

वियसदेवर् इव्वळवु पॆरिय महाभारतत्तै ऎऴुदिनारे; अवर् तम् अभिप्पिरायम् ऎन्ऱु ऎदैयेनुम् शोल्ल विरुंबि-नारा, इल्लैया ? तम् मुक्किय उपदेशमॆन्ऱु ऒन्ऱै ऎङ्गेनुम् तन्दु इरुक्किऱारा ? ऎक्कट्टत्तिलेनुम् वियास मुनिवरिन् तलै शिऱन्द करुत्तुहळ् काणप्पडुहिन्ऱनवा ? महाभारतत्तिल् आंगांगु तत्वज्ञानमुम् उपदेशंगळुम् काट्टुप् पुदर् पोल् मलिन्दु उळ्ळन । आनाल् इत् तत्वज्ञानम्

उपदेशम् आहियवट्ऱिन्-नल मळमैक्कुमे-सारमान इरहसि-
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran
यत्तै अवर् ऍङ्गेनुम् कुऱित्तिरुक्किऱारा ? आम्, कुऱित्तु इरुक्किऱार् । महाभारतम् मुळुवदैयुम् कडैन्दु ऍडुत्त वेण्णयै वियासर् भगवत् गीतैयिल् तिरट्टि वैत्तिरुक्किऱार् । गीतै वियासदेवरिन् मुक्किय बोदनैयुम् अवरदु शिन्तनैयिन् सार शेमिप्पुम् आहुम् । इदन् अडिप्पडैयिलेये "नान् मुनिवरुळ् वियासन्" ऍन्ऱ तिरु वाक्कु अर्थ पुष्टि उळ्ळदाय् आहवेण्डुम् । पण्डैक् कालम् तोट्टे गीतैक्कु उपनिडदंगळुक्कु उरिय पदवि इरुन्दु वन्दुळदु । गीतै उपनिडदंगळुक्केल्लाम् उपनिडदमाहुम् । एनेनिल्, उपनिषदंगळ् अनैत्तैयुम् कऱन्दु गीतैयाम् पालै भगवान् अर्जुननैक् कारणमाय्क्कोण्डु उलहिऱ्कु वळंगियिरुक्किऱार् । वाऴ्विन् मलर्च्चिक्कु तेवैयान ऍल्लाक् करुत्तुहळुम् गीतैयिल् इडम् पेट्रुळ्ळन। इदनालेये गीतैयै दरुमज्ञान पोक्किषमेन उण्मैयान अनुभवशालिहळ् शोल्लि उळ्ळार्हळ् । गीतै (शिष्य उरुविनदु आयिनुम्) इन्दु मतत्तिन् मुक्कियमानदोरु नूलाहुम् ।

गीतैयै श्री किरुष्णन् उपदेशित्तु अरुळिनान् ऍन्बदै यावरुम् अऱिवर् । इम् मापेरुम् बोदनैयै केट्ट बक्तनान अर्जुनन् इप्पोदनैयिनाल् तानुम् किरुष्णन् ऍन्ऱु कुऱिप्पिडुम् अळवुक्कु किरुष्णनदु तन्मैयै ऍय्दिविट्टान् । बगवान् बक्तन् इरुवरिन् उळ्ळक्किडक्कैयै वेळियिट्ट वियासदेवरैयुम् किरुष्णन् ऍन्ऱे मक्कळ् करुदत्

तोडंगुम अळवक्कु अवरुम अवरहळइन ओन्रिविट्टार।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
पोदिप्पवनुम् किरुष्णन् केट्पवनुम् किरुष्णन्, अदैप् पुनैवोनुम् किरुष्णन्–इव्वारु इम्मुवरिडैयिलुम् ओरुमैप्पाडु तोन्ऱियदु पोल् आहिविट्टदु । मूवरुम् वेऱुपाडु इन्ऱि ओरुवरे पोन्ऱु आहिविट्टनर् । गीतैयै पयिलुवोनुक्कुम् अत्तहैय मन ओरुमै इन्ऱियमैयाददु ।

★ ★ ★

We seem to have come to think that no one can hope to be like a Bose unless he knows English. I cannot conceive a grosser superstition than this. No Japanese feels so heipless as we seem to do.

★ ★ ★

In my opinion, this is not a qestion to be decided by academicians. When this country becomes really free, the question of medium will be settled only one way. The academicians will frame the syllabus and prepare text-books accordingly.

From 'The mind of Mahatma Gandhi' Page 382

★ ★ ★

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

मुऴुक्क मुऴुकक गान्दीजियाले नूऱ्कप् पट्ट नूलाल् ओरु तुणि नेय्यप् पट्टु इरुन्दाल् अदनै (अदै) ओरु विलै मदिप्पु अट्ऱ (अमूल्य) देशीय शोत्ताह करुदि पोट्ऱि पादुकाक्क माट्टोमा ? कदर् तुणि अेल्लामे गान्दीजी नूट्ऱ नूलाल् नेय्यप्पट्टताह नाम् करुद वेण्डुम्। राणुव (सेना के) शिप्पाय्हळ् (सैनिक) अडैयुम् वेट्ऱिहळ् (सफलता) दळपतियिन् (सेनापति) वेट्ऱिहळाहक् करुदप्पपडुवदु पोल, कैय्याल् नूऱकप्पट्ट नूल् अेदुवानालुम् अदै गान्दिजी नूट्ऱताहवे करुद वेण्डुम्। कदरै नमदु देशीय परम्परै शोत्ताह (संपत्ती) करुदिप् पोट्ऱुवोम्। पोरुळादारक् (अर्थशास्त्र) कुऴप्पत्तिल् अदनै ईडुपडुपडुत्ति (खींचकर) कीऴ् आक्कादु इरुप्पोम्।

कदरै अणिबवर्हळ् (पहनेवाले) अनैवरुम् उणमैयान गान्दीय वादिहळ् इल्लै अेन्बदर्क्काह (इस कारण से) कदर् अणिवदै विडलामा ? नाट्टिल् उळ्ळ अेल्ला मोशडिक्कारर्हळुम् (दोखेबाज लोग) हिन्दुक्कळाय् इरुन्दु "शिवाय नम"; "नारायण ओम्" अेन्नुम् मन्दिरंगळै उच्चरिक्किऱार्हळ् अेनरु (इति) वैत्तुक् कोळ्वोम्। अदर्क्काह नान् अम्मन्दिरंगळैक् कूऱादु विडमाट्टेन्; अवट्ऱैये नानुम् शोल्लिक्कोण्डु तान् इरुप्पेन्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(१)

भक्त की अभिरुचि : भगवान का गुण–गान

पच्चै मामलै पोल् मेनि पवळ वाय् कमलच् चेंगण्
अच्चुदा अमरर् एऱे आयर्दम् कोळुन्दे अेन्नुम्
इच्चुवै तविर यान् पोय् इंदिर लोकम् आळुम्
अच्चुवै पेरिनुम् वेण्डेन् अरंग मानगर् उळाने ।।

अर्थ

हरे रंग के बडे पहाड जैसा देहकान्ति; मूंगा जैसा लाल वर्ण का मुंह; कमल जैसा नेत्र; अच्युता, देवताओंमें श्रेष्ट; गोकुल के प्यारा; इस तरह के संबोधन करते रहने में जो स्वाद है, उसके बदले में अगर मुझे इन्द्रलोक के आधिपत्य भी दिया जाये तो भी मैं उसे नहीं पसन्द करूंगा। श्री रंग क्षेत्र में बसे हे रंगनाथ ।

मा = बडा । मामलै; मानगर; मानिलम् = प्रान्त । कोळुन्दु = कोमल पत्ते । मृदु; प्यारा । शुवै = स्वाद; रुचि ।

* * *

(२)

वेदनूल् पिरायम् नूऱु मनिदर् ताम् पुहुवरेनुम्
पादियुम् उऱंगिप् पोहुम् निन्ऱदिल् पदिनै आण्डु
पेदै बालकनताहुम् पिणि पशि मूप्पु तुन्बम्
आदलाल् पिऱवि वेण्डेन् अरंग मानगर् उळाने ।।

अर्थ

भक्त कहता है कि वह जन्म ही नहीं चाहेगा। कहता है अगर वेदके कहे अनुसार पूरे सौ साल के लियें मनुष्य-जन्म मिले तो भी वह नहीं चाहिये ।

क्यों ? उस पूर्ण आयुका आधा हिस्सा तो नींद में बीत जायगा।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran
बाकी बचेमें पन्द्रह तो अनजान बालक पन में चला जायेगा। फिर भूख बूढापा व्यधि आदि के दुःख भी हैं। इससे जन्म ही नहीं चाहिये श्री रंगक्षेत्र में बसे हे रंगनाथा।

पिरायम् = ऊमर। उरंगु = सोओ। उऱक्कम् = नींद। निन्ऱदिल् = वाकी में। पेदै = अनजान; अबोध। पिणि = व्याधि। पिऱवि=जन्म।

* * *

(३)

ईशावस्ययं इदम् सर्वम्

वानाहि मण्णाहि वळियाहि ओळियाहि
ऊनाहि उयिराहि उण्मैयुमाय् इन्मैयुमाय्क्
कोनाहि यान् ऍनदु ऍन्ऱवरै कूत्ताट्टुवान्
आहि निन्ऱायै ऍन् शोल्लि वाळ्त्तुवने॥

अर्थ

आकाश, पृथ्वी, हवा, प्रकाश, मांस, (हमारा शरीर) और जीवन सब तू ही है। "होना" और "ऩ होना" दोनों तू ही है। जब लोग (यन्त्रारुढ पुतलियों के समान) "मैं" और "मेरा" ऐसा कह कर नाचते हैं; हे प्रभू तू देखता रहता है। तेरी ऐसे की स्तुति मैं किन शब्दो में करूँ।

आहि = होकर। बनकर।

"वान् अहि निन्रायै ऍन् शोल्लि वाळ्त्तुवने" इसतरह मण्, वळि, ओळि, ऊन्, आदि को लेकर अलग-अलग वाक्य बन सकते।

—माणिक्क वाचकर्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

काट्ऱु = वायु ।

(सुब्रमण्य भारती)

मऴै कालम्; मालै नेरम् । कुळिर्न्द काट्ऱु वरुहिऱदु । नोयाळि उडम्बै मूडिक् कोळ्हिऱान् । पयन् इल्लै ।

काट्ऱुक्कु अंजि उलहत्तिल् इन्बत्तुडन् वाऴ मुडियादु । पिराणन् (प्राण) काट्ऱु आयिन् अदऱ्कु अंजि वाऴ्वदु उण्डो !

काट्ऱु नम्मीदु वीशुह । अदु नम्मै नोय् इन्ऱि कात्तिडुम् । मलैक् काट्ऱु नल्लदु; वान् काट्ऱुम् नल्लदु । ऊर् काट्ऱै मनिदर् पहैवन् आक्किविडुहिन्ऱनर् । अवर्हळ् काट्ऱु देय्वत्तै नेरे वऴिपडुवदु इल्लै ।

अदनाल् काट्ऱु देवन् शिनम् अय्दि (कोण्डु) अवर्हळै अऴिक्किऱान् । नाम् काट्ऱु देवनै बणंगुवोम् । अवन् वरुम् वऴियिल् शेऱु तङ्गल् आहादु । नाट्ऱम् इरुक्कल् आहादु । अऴुहिन पण्डङ्गळै पोडल् आहादु । अेव्विदमान अशुत्तमुम् कूडादु ।

काट्ऱु वरुहिऱान् । अवन् वरुम् वऴियै नन्ऱाह तुडैत्तु नल्ल नीर् तेळित्तु वैप्पोम् । अवन् वरुम् वऴियिल् कऱ्पूरम् मुदलिय पोरुळ्हळै कोळुत्ति वैप्पोम् । अवन् नल्ल मरुन्दाह वरुह । अमुदम् आहि वरुह । काट्ऱै वऴिपडुहिन्ऱोम् । अवन् महा राणियिन् मैन्दन् । अवन्क्कु नल् वरवु कूऱुहिन्ऱोम् । अवन् वाऴ्ह ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मूडिक्कोळ्हिऱान् = ओढ लेता है। ढक लेता है।

नोयाळि = बिमार आदमी। नोय् = व्याधि; बिमारी।

वीशुह = खूब चले। वीशुदल् = हवा का चलना। blow

इन्ऱि = विना। वान् = वर्षा। पहैवन् = दुश्मन।

पहै = शत्रुता। वऴिपिडुवदु = वणंगुवदु।

अऴिक्किरान् = नाश करता है। शेऱु = कीचड़।

नाट्ऱम् = दुर्गन्ध। अऴिहिन = सडी हुई (चीज़)

तुडैत्तु = साफ़ करके। तेळित्तु सींच कर।

सब क्षेत्रीय या प्रादेशिक भाषाओं की सेवा और उसके विकास में हिन्दी मदद करेगी, तब ही, सब लोक–भाषाओं की मदद से और आशीर्वाद से हिन्दी पनपेगी और राष्ट्र–भाषा होगी। लोक भाषाओंको प्रोत्साहन न दिया, उनको दबानेकी कोशिश की तो आपस में झगडे और देश के टुकडे–टुकडे हो जायंगे।

–काका कालेलकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अेङ्गळ् ताय्

(भारती)

(१)

तोन्ऱु निहऴ्न्ददनैत्तुम् उणर्न्दिडु
शूऴ् कलै वाणर्हळुम्.....इवळ्
अेन्ऱु पिऱन्दनळ् अेन्ऱु उणराद
इयल् बिनळाम् अेङळ् ताय् ।।

पुराने जमाने में घटी सब बातों को जाननेवाले इतिहास–वेत्ता विद्वान भी यह नहीं बता सकते कि हमारी माँ (भारत) कब (किस दिन पैदा हुई । हमारी माँ की ऐसी (विचित्र) हालत है ।

तोन्ऱु = प्रचीन काल में ।

निहऴ्दल् = होना; घटना; (happen)

उणर्दल् = समझना । जानना । (Feel)

इयल्बु = स्वभाव ।

(२)

मुप्पदु कोडि मुहमुडैयाळ् उयिर्
मोय्म्बुऱ ओन्ऱुडैयाळ्–इवळ्
शेप्पु मोऴि पदिनेट्टुडैयाळ् अेनिल्
चिन्तनै ओन्ऱुडैयाळ् ।।

यह (हमारी माँ) तीस करोड मुखवाली है; भिर भी इसके प्राण एक ही है । यद्यपि यह आठारह भा ायें बोलनेवाली है; इसका चिन्तन एक ही है ।

इस पद में **शेप्पु** शब्द आया है जो तेलुगे में प्रचालित शब्द है । राष्ट्र कवि भारती में संकीर्णता का अभाव व्यक्त करता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

आत्ति सूडि

(औवैयार् अरुळियदु)

यह स्कूल में शुरू के कक्षाओं में पढाया जाता है ।

1 **अऱम् शेय विरुम्बु ।**

अऱम्–धर्म । शेय–शेय्य । विरुम्बु–इच्छा करो ।

समाज में शान्ति स्थापित करने का जो एकमात्र उपाय है उसे सूत्र रूप में कहा है । "धर्म चर" का छायानुवाद है ।

2 **आऱुवदु शिनम्**

शिनम् – क्रोध । गुस्सा । आऱु (अकर्मक) – ठंडा होना । आऱुवदु–आऱवेण्डुवदु–जो ठंडा या शान्त होना चाहिये वह । आट्रु–ठंडा कर (सकर्मक) ।

क्रोध तो आना नहीं चाहिये । अगर कभी आ जाय तो उसे शान्त कर देना होना चाहिये । अधर्मों का मूल क्रोध है ।

3 **इयल्वदु करवेल्**

इयल्वदु–जो तुम सहज (स्वाभाविक) कर सकते हो । करवेल्–न छिपावें । इयल्बु–स्वभाव ।

जो हम सहज कर सकते हैं उसे न छिपाना चाहिये ।

4 **इळमैयिल् कल्**

इळमै–छुटपन; बाल्यावस्था । मुदुमै–बूढापा । कल्–सीख । कल् (संज्ञा)–पत्थर ।

जो कुछ सीखना है वह सब छुटपन में ही सीख लेना चाहिये ।

5 **ईवदु विलक्केल्**

ई–दे । ईवदु–देना; दान करना । विलक्कु–छोडो; रोको ।

दान क्रिया हमेशा होती रहनी चाहिये। खुद देना भी न छोडें,
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
दूसरे को भी देने से न रोकें।

6 **उडैयदु विळम्बेल्**

षष्ठी विभक्ति प्रत्यय "उडैय" से बनी सज्ञा **उडैयदु**–जो अपने पास है। धनादि।

अपने पास के धनादि को बढा चढाकर न सुनावें।

7 **ऊक्कम् अदु कैविडेल्**

उक्कम्–उत्साह। लगन। अदु–उसे। कैविडैल = न छोडें।

उत्साह गुणको कभी न खोवे।

8 **अेण् अेळुत्तु इहळेल्**

अेण–अंक। गणित। अेळुत्तु–अक्षर। भाषा, साहित्य। इहळ–निंदा कर। इहळादे आज्ञार्थ।

गणित और भांषाज्ञान की उपेक्षा न करें।

9 **एऱ्पदु इहळ्च्चि**

एऱ्पदु–याचना करना। (इहळ् से संज्ञा) इहळ्च्चि–हळिवु–नीचापन।

किसी के पास याचना करना, भीख मंगना, अगौरव है, निंदनीय है।

10 **ऐयम् इट्टु उण्**

ऐयम्–भिक्षा। इट्टु–देकर। उण्–खाओ।

भोजन करने के पहले यह देखना कि कोई भिक्षा लेने आया है। उसे खाना देकर खुद खाओ।

11 **ओप्पुरवु ओळुहु**

ओप्पुरवु–अपने समाज की चाल। ओळुहु–चल।

अपने आसपासकी दुनिया की रीति देखकर तदनुसार तुम भी
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran
चलो ।

12 **ओदुवदु ओऴियेल्**

ओदुवदु–स्वाध्याय । ओऴियेल्–कभी (जिन्दगीभर) न छोडो ।

13 **औवियम् पेशेल्**

औवियम्–इर्ष्याके बचन । पेशेल्–न बोले ।

इर्ष्याके शब्द कभी न बोलें ।

14 **कण्डु ओन्ऱु शोल्लेल्**

कण्डु–(ओन्ऱै) पार्त्तु । ओन्ऱु-(पार्क्काद वेऱु) ओन्ऱै शोल्लेल्–न कहें ।

जो आखों से देखा उसे बदल कर, दूसरा कुछ बताना नहीं चाहिये ।

15 **ञयम् पड उरै**

ञयम् पड–इनिमै उण्डाहुम् पडि–मीठा लगे ऐसा । उरै–बोलो ।

सुनने वाले को मीठी लगे ऐसी बोली बोलो ।
प्रियम् ब्रूयात् का समानार्थक ।

16 **तन्दै ताय् पेण्**

तन्दै ताय्–(माता पिता) पेट्ऱोर । पेण्–अन्बुडन् काप्पाट्ऱु ।
आदर से परवरिश कर ।

माता पिता को आदर व प्रेम के साथ सेवा कर उनकी रक्षा कर ।

* * *

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उल्लह नीति

(ये श्री उलहनातन द्वारा रचित बच्चों के उपयोगी निषेधात्मक उपदेश वाक्य हैं। जिन बातों से बचना चाहिये उनको बचपन में स्थिर करने का प्रयत्न है)

1 **ओदामल् ओरु नाळुम् इरुक्क वेण्डाम् ।**

स्वाध्याय को कभी न छोडें ।

ओदुदल्=धर्म–ग्रंथों का अध्ययन करना, पढना ।

2 **ओरुवरैयुम् पोल्लांगु शोल्ल वेण्डाम् ।**

किसी पर झूठा आरोपण न करें ।

पोल्लांगु–पळि–झुठा आरोप ।

3 **मातावै ओरु नाळुम् मऱक्क वेण्डाम् ।**

माता को कभी भूलें नहीं ।

मऱत्तल्–भूलना । मऱदि–विस्मरण ।

4 **वञ्जनैहळ् शेय्वारोडु इणंग वेण्डाम् ।**

कपटी लोगों के साथ मेल न करें ।

वञ्जनै–कपटी व्यवहार । इणंग–शेर–मिलना ।

5 **नेञ्जार पोय् तन्नै शोल्ल वेण्डाम् ।**

अपने मन में खूब जानते हुए झूठ न बोलें ।

नेञ्जु आर–जान बूझकर । नेञ्जु = मन ।

6 **नञ्जुडने ओरु नाळुम् पळ्ह वेण्डाम् ।**

विषैली जन्तुओं के साथ कभी व्यवहार (खेल आदि) न करें ।

नञ्जु–विष । पळहुदल्–मिलना–जुलना ।

7 **अडुत्तवरै ओरु नाळुम् केडुक्क वेण्डाम् ।**

शरण आये लोगों को कभी नुकसान नहीं पहुंचावें ।

कल्लक्क–नाश करना । कड्दि–नुकसान ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

8 **मनम् पोन पोक्केल्लाम् पोह वेण्डाम् ।**

हर हमेशा मन के पीछे चलते न रहें ।

पोक्कु–चाल ।

9 **माट्ऱानै उऱवेन्ऱु नम्ब वेण्डाम् ।**

शत्रु को कभी अपना रिश्तेदार न मानें ।

माट्ऱान्–शत्रु । उऱवु–रिस्तेदार । नम्बुदल्–विश्वास करना । नम्बिक्कै–विश्वास ।

10 **तनम् तेडि उण्णामल् पुदैक्क वेण्डाम् ।**

धनार्जन् करके विना खाये (भोगे) जमीन में गाडकर न रखें ।

तनम्–धन । तेडि–संग्रह करके ।
पुदैत्तल्–जमीन में गाडकर रखना ।
पुदैयल्–जो धन जमीन में गाडकर रखा पडा है ।

11 **दरुमत्तै ओरु नाळुम् मऱक्क वेण्डाम् ।**

कभी भी धर्म को (पुण्यकार्य करना) न भूलें ।

12 **कट्ऱवरै ओरु नाळुम् पऴिक्क वेण्डाम् ।**

शिक्षित व्यक्ति की कभी निंदा न करें ।

पऴित्तल्–निन्दा करना । हंसी उडाना । पऴिक्किऱान् ।

13 **कोविल् इल्ला ऊरिल् कुडि इरुक्क वेण्डाम् ।**

जिस गांव में मंदिर नहीं है वहां बसें नहीं ।

कोविल्–मंदिर । कुडि इरुत्तल्–रहना । बसना ।

14 **मदियादार् तलैवाशल् मिदिक्क वेण्डाम् ।**

जो तुम्हारा आदर नहीं करता उसके घर के आँगन में कदम न रखें ।

मदित्तल्–आदर करना । तलैवाशल्–घरका आंगन ।
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
मिदित्तल्–पैर रखना । मिदिक्किरान् ।

15 **मूत्तोर् शोल् वार्त्तैहळै मऱक्क वेण्डाम् ।**

बडों के वचन कभी भूलें नहीं ।

मूत्तोर्–बडे लोग । ऊमर से, ज्ञान से ।

16 **पोदु निलत्तिल् ओरु नाळुम् इरुक्क वेण्डाम् ।**

जिस जमीन पर सारे गांव का हक है, उसपर न बसें ।

पोदु– (Common) जिसपर सबका समान हक है ।
(आजकल इसका उल्लंघन हर जगह होता है)

17 **इरु दारम् ओरु नाळुम् तेड वेण्डाम् ।**

दो स्त्रियों के साथ कभी विवाह न करें ।

दारम्–पत्नी । संस्कृत–दारा ।

18 **शेय् नन्ऱि ओरु नाळुम् मऱक्क वेण्डाम् ।**

दूसरे के किये उपकार को कभी न भूलें ।

नन्ऱि–उपकार ।

19 **पुण्पडवे वार्त्तैहळै शोल्ल वेण्डाम् ।**

दूसरे के मनको दुःख देनेवाले शब्द कभी न बोलें ।

पुण्–घाव । दुःख ।

20 **इऱन्दालुम पोय् तन्नै शोल्ल वेण्डाम् ।**

चाहे जान भी चले जाये, झूठ न बोलें ।

इऱत्तल्–मरना । इऱप्पु–मृत्यु । इऱन्दान् ।

* * *

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

(१)

सुदेश मित्रन् (दिनशरि) (दैनिक) शेन्नै

पिरतमर् निरूपर् कूट्टत्तिल् मोऴि पिरश्नै (प्रश्न)

हिन्दियिल् केळ्वि केट्टदैयुम् हिंदियिलेये पदिल् अळिप्प-दैयुम् ओरु निरूपर् आट्चेबित्तार् । हिन्दियिलेये पेच्चु नडन्दाल् अदनै (अदै) मोऴिपेयर्प्पु इन्ऱि तन्नैप् पोन्ऱ-वर्हळ् अरिन्दुकोळ्ळ मुडियादु अेन शिऱिदु आत्तिरत्तुडन् कूऱिनार् ।

पिरतम मन्तिरि नहैच् चुवैयुडन् तामे केळ्वि पदिल् इरण्डैयुम् आंगिलत्तिल् मोऴि पेयर्त्तु तरुवदाह तेरिवित्तार् ।

इरुदियिल् हिन्दी तेरिन्द पत्तिरिक्कैयाळर् अम्-मोऴि तेरियाद नण्बरुक्कु कट्रुक् कोडुक्कलाम्; अत्तुडन् तमिऴैयुम् कऱ्कलाम् अेन्ऱु कूऱिनार् ।

सर्कारे पूनै वळर्क्किरदु

पूनैयाह पिऱन्दाल्' हॉम्बर्ग् नगरिल् पिऱक्क वेंडुम् । एनेनिल् अंगे सर्क्कारे पदिनायिरम् पूनैहळै वळर्क्किऱ्दु । इन्द सर्क्कार् पूनैहळुक्कु बड्जेटिल् निदि ओदुक्क पट्टु, पाल् नमिशम् अहियवट्रिऱ्कु वहै शेय्यप्पडुहिऱ्दु । इप्पूनैहळै अेद्र्-क्काह पाडुपट्टु वळर्क्किरदु तेरियुमा ? तुरैमुहत्तिल् उळ्ळ अेलिहळ् तोल्लैयै शमाळिक्क पूनैहळ् सर्क्कार् " विरुंदाळिहळाह उळ्ळन । उलहिलेये ऐन्दावदु, मिह पेरिय तुरैमुहमान हॉम्बर्गिल्

एराळमाह उणवु दानियंगळं कैयाळपपड्डहिन्रन। इवट्रै वेट्टै
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
आड निनैक्कुम् अलिहळै तीर्त्तु कट्टुवदे इन्द पूनैहळिन् वेलैयाहुम्।

"गिराम राज्यम्" वार पत्तिरिकै (मदुरै)

विज्ञान युगत्तिल् ओव्वोरु मनिदनालुम् विवशायियिनालुम् (कुडियानवनालुम्) यन्दिरंगळै, पुदिय करुविहळै, तनित् तनि वांगि उपयोहिक्क मुडियादु। ऊर् (गिरामम्) मुळुदुम् ओन्-राय् शेर्न्दाल् अदु ओरे समूहमाह इयंगिनाल् तान् इदै शेय्य मुडियुम्। गिरामत्तै ओन्राक्क गिरामदानैत्तै तविर वेरु उपायमे इल्लै।

—विनोबा

निरूपर = संवाददाता। आट्चेपित्तार् = विरोध किया (Objected)
मोळि पेयर्प्पु = अनुवाद; तर्जुमा। आत्तिरम् = गुस्सा।
नहैच्चुवै = हास्य रस। तुरैमुहम् = (Port) बन्दरगाह।
तोल्लै = उपद्रव। तीर्त्तु कट्टुवदु = काम तमाम करना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

आनन्द विकटन् (साप्ताहिक) मद्रास २४-१२-६७

तलै अंगम् (अग्रलेख)

तमदु मेजारिटि कुरैन्द पिऱहुम् पदवियिल् इरुक्क तमक्कु उरिमै (हक) इरुक्किऱदु अेन्गिऱार्, मेऱ्कु वंगाळन्तिन् मुन्नाळ (भूतपूर्व) मुदल् अमैच्चर् (मंत्री) अजेय मुकर्जी।

शट्टसबै (Legislature) नडवडिक्कैहळै (कार्रवाई) ओऴुङ्गाह नडत्त वेण्डिय सभा–नायकर् (Speaker) शट्ट सबैयै नडत्तामल् गवर्नरिन् अधिकारत्तै पट्रि तीर्प्पु (फैसला) कूऱुहिऱार्।

मशोदाक्कळै (प्रस्ताव) पट्रि विवादित्तु शट्टँगळै उरुवाक्क (रूप देने) पाराळुमन्ऱत्तिऱ्कु (लोकसभा को) वन्द जनसंग उरुप्पिनर् (सदस्य) पाराळु मन्ऱत्निन् उळ्ळेये मशोदावैये तीयिट्टु कोळुत्तुहिऱार् (जलाते हैं)।

शट्टत्तै (कानून को) ओऴुङ्गाह काक्क वेंडिय अमैच्चर्-हळिल् इरुवर् शट्टत्तै मीऱि दण्डनै पेऱुहिऱार्हळ्।

कुट्रम् पुरिन्दवर्हळै (करनेवालोंको) तण्डिक्क वेंडिय माजिस्ट्रेट्टुहळे रयिलिल् टिकट् इल्लामल् पिरयाणम् शेय्दु कैदु शेय्यपपडुहिऱार्हळ्।

पडिककच् चेन्ऱ माणवर्हळ् पल्कलै कळहत्तैये (विश्व वद्यालको ही) नोरुक्कि कोण्डु इरुक्किऱार्हळ् (चूर चूर कर रहे हैं)।

नाडु अेङ्गे पोय्क् कोण्डु इरुक्किरदु ?

* * *

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गान्दिजी मीण्डुम् शट्ट अंदिर्प्पुहळै तोडंगिनार् । अवर् कूऱिय पडि इन्दियर्हळ् अन्बोडुम् अैमदियोडुम् अरशांगत्तोडु पोरिट्टार्हळ् । अन्द अन्बु पोराट्टत्तिल् शिऱैक्कु शेन्ऱु विडुदलै अडैन्दवर्हळ् पल कष्टंगळुक्कु उट्पटार्हळ् । अवर्हळुक्काह गान्दिजी ओरु एर्प्पाडु शेय्दार् ।

श्री कालन्बर्क अेन्बवर् गान्दिजीयिन् नण्बर् । अवरिड-मिरुन्दु १,१०० एकर् निलत्तै अन्बु अळिप्पाह पेट्ऱार् । अन्द इडत्तिल् शिऱै शेन्ऱु मीण्डवर्हळैयुम् अवर्हळदु कुडुम्बत्तारैयुम् कुडि एट्ऱिनार् । नण्बर कालनबर्क्कुम् अवर्हळुडनेये वशित्तार् । अदर्कुत्तान् टाल्स्टाय् पण्णै अेन्ऱु पेयर् ।

टाल्स्टाय् पण्णैयिल् अेल्लोरुम् ओरे कुडुम्बमाह बाळ्न्दार्-हळ् अेळिमैयान वाळ्क्कैयै मेर्कोण्डार्हळ् । अेदर्कुम् वेलैक्का-रर्हळे किडैयादु । अेल्लावेलैहळैयुम् अेल्लोरुम् शेय्दार्हळ् । गान्दिजियिन् कुडुम्बमुम् अंगे तान् इरुन्ददु ।

अंगु इरुन्द अेल्लोरुम् तच्चु वेलै शेरुप्पु तैत्तल् मुदलिय कैत् तोऴिल्हळै कट्रुक्कोण्डार्हळ् । गान्दिजी अंगेतान् शरुप्पु तैक्क कट्रुक्कोण्डार् । पिऱहु अदिल् तिऱमैयुम् पेट्ऱार् ।

अंगिरुन्द कुऴन्दैहळुक्कु पडिप्पु शोल्लिक् कोडुक्क वेण्डि इरुन्ददु । अन्द पोऱुप्पै गान्दिजीये अेडुत्तुक्कोण्डार् । अंगे तमिळ् कुळन्दैहळ् इरुन्दार्हळ् । गान्दिजियिक्कु तमिळुम् कोञ्जम् तेरियुम् । अदनाल् अवर् **तमिळुम् शोल्लिक्कोडुत्तार्** ।

* * *

गान्धी स्मारक निधि मदुरै के प्रकाशित **"अन्बु वऴि नडन्द अण्णल्"** पुस्तक से साभार उद्धृत ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

निवेदन

यह अंक एक नमूना है। आगे की कल्पना को बीज--रूप में रखा।

अगर पाठक-संख्या और अर्थ-व्यवस्था संतोष-जनक रही तो इस तरह पत्रिका को एकाधा साल चलाना लाभदायक होगा।

ऐसा सुअवसर मिले तो नीचे लिखे अंग हर महिने रखे जायँगे।

तिरुक्कुऱळ् आठ पेज
सुब्रमण्य भारती आठ पेज
गीतै पेरुरैहळ आठ पेज
पत्तिरिकै समाचार आठ पेज

आगे चलकर पाठकों की सलाह से इसे कई तरह से उपयोगी बना सकते हैं। पाठक किसी पडोसी तमिल भाई की मदद लेंगे, ऐसा मान कर ही, कहीं कहीं शब्दार्थ नहीं दिया।

सेवाग्राम
ता. ३०।१।६८

रा. शंकरन
तमिऴ-नागरी प्रचारक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant